श्लोक नं० 9

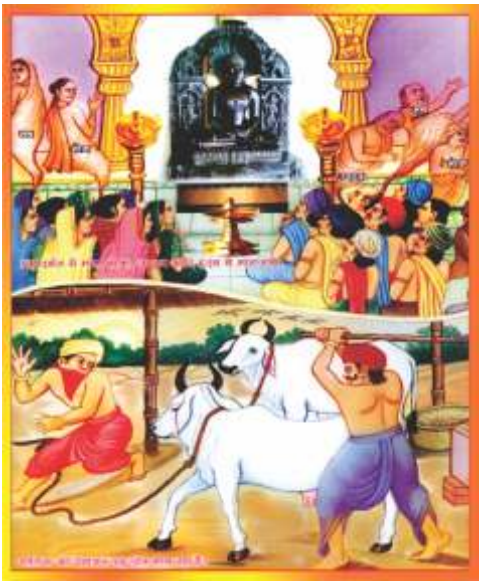

प्रभु दर्शन से संकट मुक्ति

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!
रौद्रै-रुपद्रव-शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे
चौरैरिवाऽऽशु पशवः प्रपलायमानैः॥ 9॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

कई उपद्रव महा भयङ्कर एक साथ आवें।
तो भी मात्र आप दर्शन से पल में नश जावें॥
जैसे चोर चुराकर गायें झटपट भाग रहे।
लेकिन गोस्वामी दिखते ही गोधन छोड़ रहे॥
कर्मचोर ने मेरे आतम धन को लूट लिया।
अन्तर्यामी जगनामी का मैंने शरण लिया॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 9॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण-सोदाराणं।

मुनीन् संभिन्नश्रोत्रर्द्धीन्, विश्वशब्दप्रकाशकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 9॥

ॐ ह्रीं अर्हं संभिन्नश्रोतृभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

घत्ता

1. मुक्ती के स्वामी, हे शिवगामी, कोई आपका स्वामी ना।
मेरे प्रिय भगवन्, मेरा जीवन, तव पद में अर्पण करना॥ 449॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. गुण अवाच्य सारे, प्रभु ने धारे, महिमा कोई गा न सके।
चाहूँ तव दर्शन,प्यासे नयनन, प्यास न अब तक बुझा सके॥ 450॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. हे भदन्त प्यारे, भविजन सारे, चातक सम सब टेर रहे।
बालक अधीर है, भरा नीर है, नयनों से अब पीर बहे॥ 451॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. एकान्त चाहता, प्रभु से मिलता, किन्तु विकल्पों ने घेरा।
क्यों दीन बना हूँ, दुखी घना हूँ, दोष स्वयं का है मेरा॥ 452॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ए' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. वन भवन समाना, शत्रु मित्र ना, सब जीवों में साम्य धरें।
धनपति निर्धन में, काँच कनक में, समान ही व्यवहार करें॥ 453॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. मनमोहक मूरत, श्यामल सूरत, सब जीवों को मोह रही।
कर विहार भू पर, चउ अङ्गुल पर, देह आपकी शोभ रही॥ 454॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. अनुपम प्रभु शासन, निज अनुशासन, खड्गासन से मोक्ष गए।
तव शरणा पाकर,ध्यान लगाकर,अनगिन भविजन पार हुए॥ 455॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. अरजाः कहाते, कर्म नशाते, निजातमा को शुद्ध किया।
सब तमस मिटाकर,ज्ञान उजागर,भवि जीवों को दीप्त किया॥ 456॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. सविनय वन्दन है, अभिनन्दन है, अर्घ्य चढ़ाने मैं आया।
प्रभु अतिशयकारी, छवि सुखकारी, परमौदारिक तन पाया॥ 457॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. हरते सब संकट, कर्म के कंटक, प्रभु-भक्ति से दूर हुए।
अतएव शरण में, तुम्हें पूजने, श्रद्धा से भरपूर हुए॥ 458॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. सादर मम वन्दन, वामानन्दन, पूजन करने मैं आया।
गुण लिखे न जाएँ, कहे न जाएँ, पार किसी ने ना पाया॥ 459॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. जित इन्द्रिय स्वामी, शिवपद धामी, अजर-अमर अविकारी हो।
तव पद सिर नाऊँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ, सर्व जगत हितकारी हो॥ 460॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. नेत्रों से देखूँ, कब अवलोकूँ, तव दर्शन दुर्लभ पाऊँ।
रागी के द्वारे, दुख ही पाए, कहो प्रभो किस दर जाऊँ॥ 461॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ने' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. इन्द्राधिपति हो, ऋषि मुनि पति हो, तीन भुवन के तुम स्वामी।
पंचम गति पायी, अति सुखदायी, हुए आप मुक्तीगामी॥ 462॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्द्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. रौरव नरकों में, अति दुख भोगे, दुर्लभता से मनुज हुआ।
जिन कुल पाया है, दर्श किया है, जिनगुण गाकर हरष जिया॥ 463॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. इन्द्रैः पूजित हैं, सुर अर्चित हैं, भक्त हृदय प्रभु वास करें।
जब आए द्वारे, तुम्हें पुकारे, भविजन के सब कष्ट हरें॥ 464॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्रै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. रुचि प्रभु में लागी, निज धुन लागी, निज आतम उद्धार करूँ।
यह भक्त निबल है, प्रभु संबल हैं, शीघ्र भवोदधि पार करूँ॥ 465॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. पल-भर सुख पाने, भोग भोगने, अनन्त भव मैंने खोए।
अब शिवसुख पाने, लक्ष्य बना के, धर्म बीज मैंने बोए॥ 466॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. द्रव्यादि कर्म से, भावकर्म से, मुक्त हुए पारस स्वामी।
मैं कर्म युक्त हूँ, विकार युत हूँ, भटक रहा हूँ भवगामी॥ 467॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. वसु याम भजूँ मैं, नाम जपूँ मैं, मुझको भी भव से तारो।
जग में दुख जितने, प्रभु ने मेटे, मम आगत संकट टारो॥ 468॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. शत-शत प्रणाम है, यही भाव है, अपने पास बुला लेना।
प्रभु प्यास लगी है, आश जगी है, अमृत वचन पिला देना॥ 469॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. शतैस्त्वाम् वन्दन, मेटो क्रन्दन, भव-भव में अति दुख पाया।
अब प्रभु दर्शन कर, मन को दृढ़ कर, रत्नत्रय पाने आया॥ 470॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तैस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. त्वाम् जिनवर वन्दूँ, अघ को खण्डूँ, आत्म-साधना करना है।
धर वीतरागता, मन में समता, सिद्धि-पथ पर चलना है॥ 471॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. क्षायिक नव लब्धि, चौंसठ ऋद्धि, पाकर शिव सिद्धि पाई।
मम मिटे कामना, यही प्रार्थना, हे मेरे प्रिय जिनराई॥ 472॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वीराना लगता, कोई न अपना, जग स्वारथ का मेला है।
सबके ही रहते, लगता ऐसे, आतम एक अकेला है॥ 473॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. दक्षिण पश्चिम में, पूर्वोत्तर में, प्रभु की यश गाथा गूँजे।
जय-जय उच्चारे, सुर-नर सारे, अष्ट द्रव्य ले प्रभु पूजें॥ 474॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्षि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. तेजस्वी मूरत, प्रभु की लखकर, भक्त प्रभु में खो जाते।
कुछ और न दीखे, प्रभु ही सूझे, मात्र आपके हो जाते॥ 475॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. कोऽपि न सुखी हैं, सर्व दुखी हैं, जब तक प्राणी रागी है।
वे जीव धन्य हैं, जगतवन्द्य हैं, जिनका मन वैरागी है॥ 476॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. गोपुर द्वारों पर, रत्न कोट पर, देव खड़े रक्षा करने।
भविजन ही आते, जहँ प्रभु राजे, श्रद्धा से प्रवचन सुनने॥ 477॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. स्वारथ के रिश्ते, झूठे नाते, कोई किसी का नहीं हुआ।
सब सुख के साथी, सुत पितु नाती, आप शरण आ सुखी हुआ॥ 478॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. मिष्ठान्न खिलाए, देह सजाए, फिर भी तन की राख हुई।
जिनधर्म ही साथी, जगत स्वारथी, यही बात अब ज्ञात हुई॥ 479॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. निर्वाण प्राप्तकर, विदेह पदधर, शिवाङ्गना का वरण किया।
पंचम गति पाना, मैंने ठाना, अतः आपका शरण लिया॥ 480॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. प्रस्फुटित ज्ञान है, मिटा मान है, भगवन् आप कहाते हो।
वसु कर्म विजेता, सुधर्म नेता, भविजन के मन भाते हो॥ 481॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्फु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रिपु सारे हारे, लगे किनारे, प्रभु भवार्णव पार हुए।
जो ध्यान लगाए, तुमको ध्याए, उन भविजन को तार दिए॥ 482॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. तद्भव शिवगामी, निज निधि पाई, अविनाशी सुख पाया है।
ऋषि यति मुनि आते, शीश नवाते, शान्त रूप तव भाया है॥ 483॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तेरे-मेरे के, भव फेरे में, चौरासी लख योनि भ्रमा।
कुछ हाथ न आया, कष्ट उठाया, राग-द्वेष में रमा रहा॥ 484॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. जल चरण चढ़ाऊँ, भ्रमण मिटाऊँ, यही आपसे मैं मांगूँ।
प्रभुवर परमार्थी, मैं हूँ स्वार्थी, किन्तु नहीं भव सुख चाहूँ॥ 485॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. सिद्धान्त आपका, अनेकान्त का, सारा जग सम्मान करे।
जब तक शिव पाऊँ, यह ही चाहूँ, नाथ आपका ध्यान रहे॥ 486॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. दृष्टा-ज्ञाता हो, भवि त्राता हो, सबके नाथ कहाते हो।
शिवसुख के दायक, त्रिभुवन नायक, भव सन्ताप मिटाते हो॥ 487॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दृष्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. टलती बाधाएँ, सब पीड़ाएँ, आप दर्श से मिट जातीं।
जो कुछ ना चाहे, चाह मिटाए, मोक्ष डगरिया मिल जाती॥ 488॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ट' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. माङ्गल्य तिहारा, दर्शन प्यारा, प्रातः जो जन प्रभु निरखे।
दिन हो मङ्गलमय, निज से तन्मय, होकर शाश्वत सौख्य चखे॥ 489॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. त्रेधा वन्दन कर, जिन अर्चन कर, अपूर्व आनन्द होता है।
प्रभु की सन्निधि से, भव्य भक्ति से, सारे कल्मष धोता है॥ 490॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. चौतिस धर अतिशय, चार घाति क्षय, करके केवलज्ञान लिया।
तत्त्वोपदेश दें, आत्मबोध दें, सत्तर वर्ष विहार किया॥ 491॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. मैं रैन-दिवस ही, जिन सुमरन ही, करके जीवन सफल करूँ।
मजबूर भक्त है, दूर बहुत है, इसीलिए तव ध्यान धरूँ॥ 492॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. प्रभु रिद्धि-सिद्धि के, आत्म-निधि के, दाता जग के त्राता हो।
जो शरण में आए, ध्यान लगाए, शाश्वत शान्ति प्रदाता हो॥ 493॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. वात्सल्य धारकर, जीव बचाकर, सबको सत्पथ दिखलाते।
उपकार नन्त हैं, नहीं शब्द हैं, भक्त आपको सिर नाते॥ 494॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. शुद्धातम ध्याकर, राग मिटाकर, वीतरागता अपना ली।
होकर चिद्रूपी, स्वात्म स्वरूपी, मुक्तीवल्लभा परिणा ली॥ 495॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. पथ प्रभु का दुर्गम, कहता आगम, जैनागम अनुसार चलूँ।
गुरु कहते जैसा, करके वैसा, लक्ष्य परम पद मोक्ष वरूँ॥ 496॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. शक्रादिक पूजें, सब जन वन्दें, क्योंकि वन्द्य हैं आप प्रभो।
मैं शरणागत हूँ, परम भक्त हूँ, निज सम करिए मुझे विभो॥ 497॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. गुरवः पान्तु मम, पूजूँ हरदम, प्रभु-पथ का अनुसरण करूँ।
गुरु पथ निर्देशक, प्रभु उपदेशक, प्रभु सम बन भव भ्रमण हरूँ॥ 498॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. प्रभु महिमा भारी, शरण तिहारी, आकर मात्र निहार रहे।
जिनमूर्ति निरखकर, स्व-पर परखकर, निज को भक्त निखार रहे॥499॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. पल-पल मैं दुखिया,भीगी अँखियाँ,कर्मशत्रु प्रभु छलता है।
किसको बतलाऊँ, मीत न पाऊँ, प्रभु दर अच्छा लगता है॥ 500॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. लाभान्तराय है, बुरा भाग्य है, प्रभु दर्शन साक्षात् नहीं।
प्रत्यक्ष दर्श हो, खास दास को, करिए यह उपकार सही॥ 501॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ला' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. त्रय शल्य विनाशक, ज्ञान प्रकाशक, कर्मगिरि चकचूर किए।
जो भक्ति करते, युक्ती देते, उनके विधिमल दूर किए॥ 502॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. मायावी दुनिया, पग-पग छलिया, फिर भी आतम मोह करे।
निज आत्म न जाने, मन की माने, अतः नहीं वह मोक्ष वरे॥ 503॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. रत्नैः जो पूजे, शिवमग सूझे, संयम को स्वीकार करे।
निज का अनुभव कर, कर्म नष्ट कर, स्वातम का उद्धार करे॥ 504॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नैः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

प्रभु के दर्शन से, अघ सब टलते, कर्मचोर सब भाग गए।
मेरे तुम स्वामी, चिन्मय ज्ञानी, अर्घ्य चढ़ा हम सुखी हुए॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीं दुष्टोपसर्गविनाशकाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 10

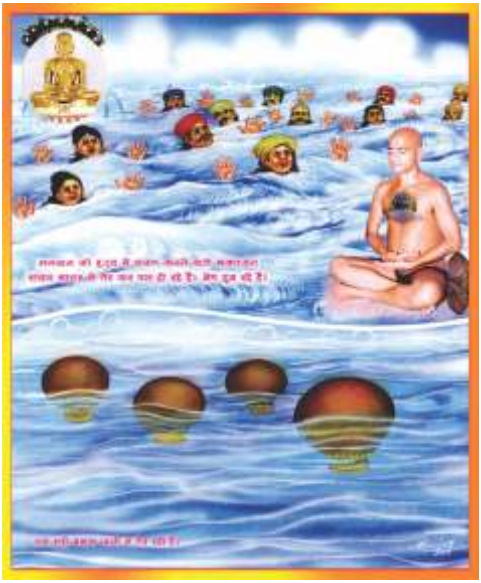

प्रभु प्रभाव से संसार पार

त्वं तारको जिन कथं भविनां त एव
त्वामुद् वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः॥ 10॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

भवसमुद्र से पार हुए जो तुमको उर में धार।
उनके तारक तुम ना स्वामी जिनभक्ति पतवार॥
जैसे मशक तैरती रहती पानी के ऊपर।
उसके भीतर भरी वायु का असर रहा उस पर॥
सच कहता हूँ तव प्रभाव से ही भव तिरते हैं।
हुए आप कृतकृत्य किन्तु हम कर्त्ता कहते हैं॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 10॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं।

ऋषीनृजुमतीन् सूक्ष्मपदार्थानेकसंविदः।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 10॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋजुमतिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

विष्णुपद छन्द

1. त्वं पार्श्व तीर्थङ्कर को मैं त्रियोग से वन्दूँ।
अष्ट द्रव्य से अर्चन करके पापों को खण्डूँ॥ 505॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. तारणहारा नाम तिहारा भवतारक जिनराज।
नाता मैंने तुमसे जोड़ा प्रभु दिखते दिन-रात॥ 506॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. रथ शिवपथ का लेकर आए पार्श्वनाथ जिनदेव।
आओ बैठो भव्य प्राणियों पहुँचो शिवपुर देश॥ 507॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. कोई नहीं जगत में मेरा एक आप ही नाथ।
भवसागर में पतित भक्त का पकड़ लीजिए हाथ॥ 508॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'को' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. जिनपुङ्गव आबाल वृद्ध के सर्व प्रियङ्कर आप।
इस बालक पर कृपा करो प्रभु करिए अब निष्पाप॥ 509॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. नरपुङ्गव धरणेन्द्र इन्द्र सबसे प्रभु पूज्य हुए।
केवलज्ञान प्राप्त कर स्वामी मुक्तीदूत हुए॥ 510॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. कनक कामिनी शाश्वत सुख हित काम नहीं आते।
प्रभु-भक्ति से बन्धन कटते शिवरमणी पाते॥ 511॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. नाथं कहकर तीन भुवन के अधिपति झुकते हैं।
बहुमूल्य हीरा मणि मुक्ता चरण चढ़ाते हैं॥ 512॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. भजन करूँ मैं वही प्रभु का नाम जहाँ आता।
नाथ आप बिन भक्तजनों का कहीं न मन लगता॥ 513॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. विषय कषायों से विमुक्त प्रभु अतः सुखी रहते।
अज्ञ जीव सब विकार के आधीन दुखी रहते॥ 514॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. भव्यानां प्रभु त्वमेव शरणं और नहीं दूजा।
इसीलिए मन-वच-काया से भक्तों ने पूजा॥ 515॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नाम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. तरणि सम प्रभु पार उतारो भवदधि डूब रहे।
नन्त वीर्य के धनी आप बिन कौन सहाय करे॥ 516॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. एक लाख श्रावक औ त्रय लख यहाँ श्राविका थीं।
समवसरण में सब श्रोताओं ने प्रभु पूजा की॥ 517॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ए' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. वल्लभ सिद्धिप्रिया के होकर निर्विकार स्वामी।
शुद्ध ब्रह्म में रमण करें नित पार्श्व जगतनामी॥ 518॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. त्वाम् प्रभुवर को देख और कोई ना मन भाता।
क्षीरसिन्धु का जल पीकर ना क्षार नीर भाता॥ 519॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. मुद् धातु का अर्थ हर्ष है हर्षित मन मेरा।
पार्श्वप्रभु की अर्चा करके मिटे जगत फेरा॥ 520॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मुद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. भव हेतु है काम भोग की बन्ध कथा सारी।
है एकत्व कथा आतम की सुन्दर सुखकारी॥ 521॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. हंसा तन से निकल जाए तो शीघ्र जला देते।
चेतन की महिमा है सारी श्री जिनवर कहते॥ 522॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तिरस्कार अपने हाथों से निज का करवाया।
कर्मशत्रु को मीत बना मैंने दुख ही पाया॥ 523॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. हृदयंगम कर प्रभु वचनामृत अजर-अमर होते।
नन्त सिद्ध हो गए इसी पथ पर चलते-चलते॥ 524॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. दर्पण सम प्रभु की मूरत में सब कुछ दिखता है।
पाप किए जो पूर्व काल में कुछ ना छिपता है॥ 525॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. येन-केन जैसे ही हो बस प्रभु की भक्ति करो।
सारे काम तजो पहले प्रभुवर की स्तुति करो॥ 526॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. नम्र हुए जो प्रभु चरणों में सिद्धालय पहुँचे।
जो जितने झुकते उतने ही उठते हैं ऊँचे॥ 527॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. यथाकाल में छह आवश्यक जो करते प्राणी।
वह अवश्य पा जाते हैं मुक्तीपुर रजधानी॥ 528॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. दुर्गति का कारण कषाय औ विषय भोग जानो।
प्रभु कहते इन सबको तजकर स्वातम पहचानो॥ 529॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. चित्त सदा चंचल है मेरा स्थिर करिए स्वामी।
शुभ भावों से शुद्ध भाव ही चाहूँ जगनामी॥ 530॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. निरंजनं प्रभु की भक्ति से भक्त सुखी होता।
पाकर शरण आपकी सारे अघ मल को धोता॥ 531॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. स्वतः प्रेरणा से आया हूँ नाथ आपके द्वार।
नाथ आपके हाथों में है अब मेरा उद्धार॥ 532॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. यश पाने को अज्ञ अन्य को नीचे गिरा रहा।
माँ जिनवाणी बतलाती वह खुद ही गिरा अहा॥ 533॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. द्वादशाङ्ग में गूँथी वाणी देती परम प्रकाश।
पतित जनों को पावन करके करती चरम विकास॥ 534॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. दृष्टि निज दृष्टा में जाए यह पुरुषार्थ करूँ।
भटके ना उपयोग अन्य में अब परमार्थ वरूँ॥ 535॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तिमिरारि हैं नाथ आप सम्यक् प्रकाश करते।
शरणागत के मिथ्यातम को पलभर में हरते॥ 536॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. समस्त लोकालोक जानते पूर्ण आपका ज्ञान।
अल्पमति मैं कैसे गाऊँ प्रभुवर का गुणगान॥ 537॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रज अरि रहस विहीन प्रभु जी किए घातिया क्षीण।
मारा-मारा फिरता हूँ मैं बना कर्म से दीन॥ 538॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. तिरोभाव हो सब विकार का ये ही अरजी है।
आप कृपा से भगवन् मुझको सिद्धि वरनी है॥ 539॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. यज्ज्ञानामृत पिला दिया है प्यासे भविजन को।
आप दयालु पथ दिखलाते शरणागत जन को॥ 540॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यज्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. जननी सम उपकारी भगवन् जीवनदाता हो।
अतः मात औ तात भ्रात प्रभु ज्ञान प्रदाता हो॥ 541॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. लगन लगी प्रत्यक्ष दर्श की नयनोत्सव कर दो।
नाथ आप ही मम नयनों में दिव्य ज्योति भर दो॥ 542॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. मेरी यह विनती है स्वामी इक भव शेष रहे।
भले छूट जाए जग सारा आप विशेष रहें॥ 543॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. षट्पद[1] जैसे सुमनों का रस पीकर मस्त रहे।
तव वचनामृत पीकर आनन्दित यह भक्त रहे॥ 544॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. कोहिनूर से अधिक कीमती समकित रत्न कहा।
प्रभु भक्तों को मिल जाते हैं तीनों रत्न महा॥ 545॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. भौरा

42. नगर-नगर और गाँव-गाँव में खुशहाली छाई।
विहार करते देख प्रभु मूरत सबको भाई॥ 546॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मन्द-मन्द पुरवैया चलती सुरकृत अतिशय से।
तोरणद्वार बँधे घर-घर में प्रभु आगमन से॥ 547॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. अतर्कगोचर पार्श्वप्रभु की महिमा शब्दातीत।
महागुणी साँवलिया प्रभु से सर्व जगत् को प्रीत॥ 548॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. गगन गमन करते प्रभुवर जब पाते केवलज्ञान।
पाँच हजार धनुष उन्नत नभ में जाते भगवान॥ 549॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. तरस रहा भक्तों का मनवा जिन छवि दर्शन को।
दिखला दो प्रत्यक्ष दर्श प्रभु आए अर्चन को॥ 550॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. रहस्य कर्मों का अब तक मैंने कुछ ना जाना।
जिनवाणी पढ़ जड़ कर्मों का स्वरूप पहचाना॥ 551॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. महाश्रमण के पद में मेरी यही प्रार्थना है।
पार्श्वप्रभु मम पास बसो बस यही भावना है॥ 552॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. रुधिर राध मल मैली थैली तन को ढोता हूँ।
चउ गतियों में परिभ्रमण कर पल-पल रोता हूँ॥ 553॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. अतः आज मैं दुःख मिटाने दर पर आया हूँ।
रुदन मिटा दो मेरा भगवन् अरजी लाया हूँ॥ 554॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. सतर्क होकर दुष्कर्मों को शीघ्र नशाना है।
द्वार आपका छोड़ प्रभु जी कहीं न जाना है॥ 555॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. कितनी बार तुम्हें पूजा पर श्रद्धा बिन क्या अर्थ।
पुण्य फलों की ही आशा थी हुआ व्यर्थ पुरुषार्थ॥ 556॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. लाभ और हानि की दृष्टि लेकर मत आओ।
आत्म हिताहित क्या है इसको स्वयं जान जाओ॥ 557॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ला' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. अनुगामी हम बने आपके भक्त यही चाहे।
नाथ आप ही बतलाते हैं शिवपुर की राहें॥ 558॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भाग्यवान ही नाथ आपका दर्शन कर पाते।
अर्चन करके पाप नाश कर प्रभु सम बन जाते॥ 559॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. भवः रहित है अचिन्त्य वैभव पारस स्वामी का।
भवसागर के तारक शासक शिवपुर धामी का॥ 560॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

मशक तैरती जल पर वायु का प्रभाव उस पर।
तव प्रभाव से भवदधि तिरते पूजूँ मैं जिनवर॥ 10॥

ॐ ह्रीं श्रीं सुध्येयाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 11

कामदेव पर विजय

यस्मिन्हर-प्रभृतयोऽपि हत-प्रभावाः
सोऽपि त्वया रतिपतिःक्षपितः क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन
पीतं न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन॥ 11॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

हरिहरादि को जीत काम ने नाम किया जग में।
उस रतिपति को किया पराजित तुमने पलभर में॥
जो जल सर्व विश्व की अग्नि शान्त करा देता।
प्रचण्ड वड़वानल उस जल को पल में पी लेता॥
कर्म रूप ईंधन को प्रभु की भक्ति अग्नि समान।
बाल ब्रह्मचारी जिनवर को बारम्बार प्रणाम॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 11॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं।

मुनीन् विपुलमत्याख्यान्, मनःपर्ययविद्युतान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं विपुलमतिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

स्रग्विणी छन्द

1. **यस्य पार्श्व जिनस्य सदा वन्दनम्।**
तीन योगों से करता रहूँ अर्चनम्॥
पार्श्व परमेश को सिर झुकाता रहूँ।
भाव से आपके गीत गाता रहूँ॥ 561॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **अहमिन्द्रों से पूजित हैं पार्श्व जिनम्।**
सिद्ध आलय बसे शाश्वता सुखकरम्॥ पार्श्व०॥ 562॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मिन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **हम सभी इस भरतक्षेत्र से पूजते।**
हर दिशा में प्रभु ही प्रभु दीखते॥ पार्श्व०॥ 563॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **रम्य है दिव्य है जिन छवि आपकी।**
दर्श करके मिटे दाह भवताप की॥ पार्श्व०॥ 564॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **हो प्रमादी सदा दुख उठाता रहा।**
चार गतियों के कष्टों को सहता रहा॥ पार्श्व०॥ 565॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **भृत्य है भक्त भगवन् मेरे आप ही।**
दर्श प्रत्यक्ष दो अर्ज है दास की॥ पार्श्व०॥ 566॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **तत्त्व-ज्ञान प्रभो आपसे ही मिला।**
भेदविज्ञान से चित्त सरसिज[1] खिला॥ पार्श्व०॥ 567॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. कमल

8. योग की साधना को सफल कर दिया।
हो निरास्रव प्रभो मुक्ति को वर लिया॥
पार्श्व परमेश को सिर झुकाता रहूँ।
भाव से आपके गीत गाता रहूँ॥ 568॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. कोऽपि कर्म टिके ना प्रभो सामने।
पा लिया नन्त वीर्य प्रभु आपने॥ पार्श्व०॥ 569॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. यह प्रभा कोटि रवि सम प्रभु देह की।
भक्त को अब लगन श्रेष्ठ शिव गेह की॥ पार्श्व०॥ 570॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. तरसते हैं कई नैन प्रभु के लिए।
आओ पारसप्रभु तारने के लिए॥ पार्श्व०॥ 571॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. प्रज्ञ हैं जो प्रभु आपकी शर्ण ले।
सिर झुकाए सदा आपके चर्ण में॥ पार्श्व०॥ 572॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. भारती माँ स्वयं गान प्रभु का करे।
सप्त भङ्गों से तत्त्व बखान करे॥ पार्श्व०॥ 573॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. मानवाः कर रहे अर्चना भक्ति से।
जोड़ा सम्बन्ध अपना परम मुक्ति से॥ पार्श्व०॥ 574॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. सोऽपि हार गया मोह जिन आपसे।
डर गया वह बेचारा प्रभु तेज से॥ पार्श्व०॥ 575॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. पालकोऽपि प्रभु आप कृतकृत्य हैं।
ऐसे भगवन् का अर्चन करूँ नित्य मैं॥
पार्श्व परमेश को सिर झुकाता रहूँ।
भाव से आपके गीत गाता रहूँ॥ 576॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. त्वम् सदैव निहारूँ प्रभो भाव से।
छूट जाऊँ सदा कर्म के जाल से॥ पार्श्व०॥ 577॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. याचना आपसे कुछ भी करता नहीं।
आप सम जग में कोई भी दाता नहीं॥ पार्श्व०॥ 578॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. रतिपति ने सभी जग को जीता मगर।
आपके सामने आ झुका दी नज़र॥ पार्श्व०॥ 579॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तिर गए आपकी जो शरण आ गए।
भव्य जीवों को भगवन् तुम्हीं भा गए॥ पार्श्व०॥ 580॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. पत्थरों को तराशो तो मूरत बने।
नर विकार हटाए तो भगवन् बने॥ पार्श्व०॥ 581॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. सङ्गतिः जैसी होवे मति हो सदा।
आपका विस्मरण ना करूँगा कदा॥ पार्श्व०॥ 582॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तिः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. हे क्षमामूर्ति पारस प्रभु वन्दनम्।
भव्य जीवों का हरते विभु क्रन्दनम्॥ पार्श्व०॥ 583॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. पिछले सुकृत से पाई शरण आपकी।
अब चलूँ मैं डगर नित्य ही मोक्ष की॥
पार्श्व परमेश को सिर झुकाता रहूँ।
भाव से आपके गीत गाता रहूँ॥ 584॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. प्रातः जागकर नाम लूँ आपका।
बीते दिन सारा भक्ति में इस दास का॥ पार्श्व०॥ 585॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. क्षय हो जाय तन तो भी डरना है क्या।
हैं प्रभु पास तो जग से करना है क्या॥ पार्श्व०॥ 586॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. णेय[1] जितने जगत में सभी जानते।
पूर्णज्ञानी प्रभु को सभी मानते॥ पार्श्व०॥ 587॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. नरक में भी तनिक शान्ति सबको मिली।
जन्म प्रभु ने लिया ज्ञान कलियाँ खिलीं॥ पार्श्व०॥ 588॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. विश्वलोचन प्रभु नन्त को जान लें।
नाथ युगपत् सभी वस्तु पहचान लें॥ पार्श्व०॥ 589॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. ध्यान औ ध्येय ध्याता स्वयं में रहा।
आपने नाथ अन्तर कथा को कहा॥ पार्श्व०॥ 590॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. पिच्छिका व कमण्डल नहीं हाथ लें।
पार्श्व तीर्थेश विचरे नगर गाँव में॥ पार्श्व०॥ 591॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. ज्ञेय

32. तारती नाथ की वाणी अमृत झरी।
प्रभु श्रीमुख से ओंकारमय है खिरी॥
पार्श्व परमेश को सिर झुकाता रहूँ।
भाव से आपके गीत गाता रहूँ॥ 592॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. हुआ जबसे प्रभु का समागम मुझे।
सच कहूँ अब प्रभु बिन नहीं कुछ रुचे॥ पार्श्व०॥ 593॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. तर्क के हैं अगोचर प्रभु जिन-वचन।
सूक्ष्म भी जानते हैं प्रभु ज्ञानघन॥ पार्श्व०॥ 594॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. भुजबलों से न संसार सिन्धु तिरे।
कृश भले तन हो पर मोह से न घिरे॥ पार्श्व०॥ 595॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. अग्रजः आप समवसृति में प्रभो।
ऋषि मुनि आपको पूजते हैं विभो॥ पार्श्व०॥ 596॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. परावर्तन अनादि से करता रहा।
आपकी सन्निधि से मैं थिर हो रहा॥ पार्श्व०॥ 597॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. यत्न ऐसा करूँ क्षपक श्रेणी चढ़ूँ।
कर्म क्षयकर सदा मोक्ष-पथ पर बढ़ूँ॥ पार्श्व०॥ 598॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. सार प्रभु भक्ति ही शेष निस्सार है।
भक्ति ही मुक्ती का एक आधार है॥ पार्श्व०॥ 599॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. थक गया हूँ प्रभु आप अति दूर हैं।
मैं चलूँगा अरुक लक्ष्य मजबूत है॥ पार्श्व०॥ 600॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. ध्येय जब तक मिले ना मैं ध्यान करूँ।
आप ही के गुणों का मैं गान करूँ॥
पार्श्व परमेश को सिर झुकाता रहूँ।
भाव से आपके गीत गाता रहूँ॥ 601॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. नम्र नयनों से कब मैं निहारूँ तुम्हें।
है ललक भक्त की दर्श देना मुझे॥ पार्श्व०॥ 602॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. पीलिया रोगी को सर्व पीला दिखे।
भक्त देखे जिधर आप ही जिन दिखे॥ पार्श्व०॥ 603॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. स्तम्भ रत्नों का हो तो भी वन्द्य नहीं।
बिन प्रभु के कभी होवे पूज्य नहीं॥ पार्श्व०॥ 604॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. नव द्वारों से मैला ये तन नश्वरं।
आज आत्मा से ध्याऊँ हे परमेश्वरं॥ पार्श्व०॥ 605॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. किंतु लेकिन अगर औ मगर कह रहा।
आत्म हित ना किया आलसी बन रहा॥ पार्श्व०॥ 606॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'किं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. तज दिए सब परिग्रह प्रभो आपने।
शीघ्र पाया है निजगृह विभो आपने॥ पार्श्व०॥ 607॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. दर्द प्रभु के विरह का सहा ना गया।
इसलिए मैं शरण आपकी आ गया॥ पार्श्व०॥ 608॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. पिया मोह जहर अब तलक मैं मरा।
अमर वाणी सुनी कर रहा निर्जरा॥ पार्श्व०॥ 609॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. दुर्जनों को न दर्शन मिलें आपके।
दर्श पाएँ जो श्रद्धालु हैं आपके॥
पार्श्व परमेश को सिर झुकाता रहूँ।
भाव से आपके गीत गाता रहूँ॥ 610॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दुर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. धर्मचक्र चले आपके अग्र ही।
कर्म विजयी का शुभ एक संकेत ही॥ पार्श्व०॥ 611॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रच धनद ने समोसर्ण रचना महा।
ना जगत में कोई शिल्पी ऐसा रहा॥ पार्श्व०॥ 612॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. वार बिन शस्त्र के नाथ कैसे किया।
मोह शत्रु हराकर विजय कर लिया॥ पार्श्व०॥ 613॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. डगमगाती है नैया तिरा दो प्रभो।
भव समन्दर किनारे लगा दो विभो॥ पार्श्व०॥ 614॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ड' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. वेदिका भक्त की शुद्ध है आइए।
नाथ आकर कभी अब नहीं जाइए॥ पार्श्व०॥ 615॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. नव्य जीवन मिला जब प्रभु जी मिले।
भक्त के आज सोए सु-भाग्य जगे॥ पार्श्व०॥ 616॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

रतिपति को पराजित किया आपने।
बाल ब्रह्म परम पद लिया आपने॥
पार्श्व जिनवर को अर्घ्य चढ़ाता रहूँ।
नाथ चरणों में शीश झुकाता रहूँ॥ 11॥

ॐ ह्रीं श्रीं अनङ्गमथनाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 12

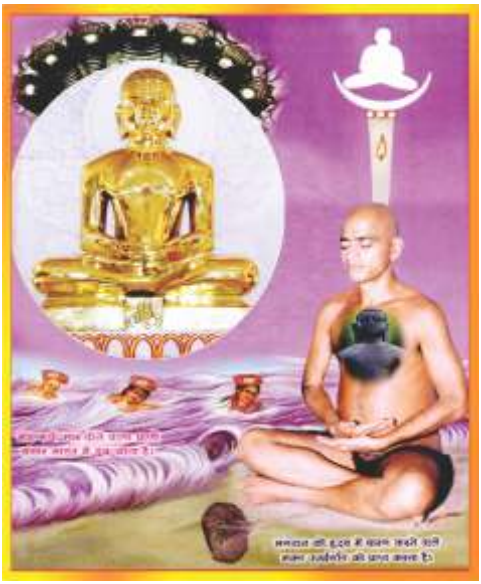

प्रभु का महान प्रभाव

स्वामिन् ननल्प गरिमाणमपि प्रपन्नास्-
त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः॥ 12॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

गौरव गरिमामय होने से गुरुतर हो जिनराय।
फिर भी उर में धरकर भविजन होते भव से पार॥
अति आश्चर्य कि दीर्घ भार से डूब नहीं पाए।
सच तो यह गुरुतम प्रभु से ही भवदधि तट पाए॥
सर्वश्रेष्ठ प्रभु हृदय वेदि पर जब विराजते हो।
लघु भक्तों को प्रभुता देकर आप तारते हो॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 12॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वियाणं।

दशपूर्वधरान् विश्व-सिद्धान्ताब्धिप्रपारगान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं दशपूर्वधरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

पद्धरि छन्द

1. **स्वा**नुभूति का स्वाद विशेष, अनुभव करते स्वात्म प्रदेश।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 617॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. अह**मिन्द्रों** से पूजित आप, मिटा रहे जग का सन्ताप।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 618॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मिन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **न**वा रहा हूँ सविनय माथ, मुक्ति तक देना प्रभु साथ।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 619॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. अ**नल्प** गुण-गण को प्रभु धार, अनगिन का करते उद्धार।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 620॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नल्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **प**रम प्रभु में सौख्य अनन्त, महिमा लिख न पाऊँ जिनन्द।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 621॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **ग**गन चूमता शिखर महान, दर्शन दो मुझको भगवान।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 622॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **रि**द्धि-सिद्धि को पाकर आप, हुए सिद्धिरमणी के नाथ।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 623॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. माया जाल कर्म का नाश, सिद्धिमहल में करते वास।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 624॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. णर सुर पशुगण शरणे आय, समवसरण में समकित पाय।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 625॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. महाविभव के स्वामी आप, नन्त चतुष्टय धारी नाथ।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 626॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. पिपासु जन तव शरणा पाय, अमृत वाणी सुन हर्षाय।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 627॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. प्रसिद्ध है जिनवर तव नाम, श्री चरणों में करूँ प्रणाम।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 628॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. पन्थ आपका दुर्गम नाथ, देना हम भक्तों को साथ।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 629॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नास्तिक भी आस्तिक बन जाय,जब जिनवर का शरणा पाय।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 630॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नास्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. त्वाम् जिन मेरा नन्त प्रणाम, दिखा दीजिए सिद्धिधाम।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 631॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वाम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. जन्म-मरण का अन्त कराय, दोष अठारह प्रभु नशाय।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 632॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. तपोमूर्ति तप के सम्राट्, मोह रिपु पर करते राज।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 633॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. शिवः शंकरः विष्णु आप, इक सहस्र नामों के नाथ।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 634॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. कर से प्रभु आशीष न देय, वीतरागता है आदेय।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 635॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. थमे श्वास जब मेरी नाथ, रहिए भगवन् मेरे पास।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 636॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. महासमर में जीते नाथ, किया अष्ट कर्मों का नाश।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 637॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. होनहार टाले न टलाय, बँधे कर्म जब फल दे जाय।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 638॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. हृदयांगन मम सूना नाथ, पधार कर प्रभु करो सनाथ।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 639॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. दस धर्मों का लेकर साथ, त्रिविध कर्म का किया विनाश।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 640॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. येन-केन ही आऊँ पास, तीव्र भावना है जिनराज।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 641॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. दयासिन्धु प्रभुवर का नाम, करते हैं नित करुणा दान।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 642॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. धाम आपका महा विशाल, नन्त सिद्ध को नमूँ त्रिकाल।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 643॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. जनाः आपको शीश नवाय, त्रिभुवन के प्रभु ईश कहाय।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 644॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. जन्म नहीं पाएँगे नाथ, जन्म-मरण से विरहित आप।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 645॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. मोती सम अक्षत को लाय, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 646॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. दशों दिशा में गूँजे नाद, जयवन्तों-जयवन्तों नाथ।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 647॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. आधिं व्याधिं करके नाश, पाऊँ मरण-समाधि नाथ।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 648॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धिम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. लक्ष्य प्राप्ति का करूँ उपाय, हे जिनवर मम करो सहाय।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 649॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. घुले लवण होवे यदि नीर, प्रभु दर्शन से मिटती पीर।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 650॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'घु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. तस्कर मोह महा बलवान, हर लेता जीवों का ज्ञान।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 651॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. रचित दिव्य अणुओं से आप, भविक जनों के प्रभु ही आप।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 652॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. अचिन्त्य महिमा है ना शब्द, अल्प बुद्धि है अबोध भक्त।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 653॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्त्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. तिथि पंच कल्याण महान, गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 654॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. लालच है अति बुरी बलाय, निर्लोभी नित सुखी कहाय।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 655॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ला' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. घर परिवार विनाशक जान, मुक्तीपथ पर किया प्रयाण।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 656॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'घ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. वेष दिगम्बर धारी आप, अठरह सहस शील के नाथ।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 657॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. नमो नमः का गूँजे नाद, प्रभु नाम का कर लूँ जाप।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 658॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. चिन्मय चिन्तामणि जिनेश, बिन चिन्तन दें ज्ञान विशेष।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 659॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चिन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. नित्योद्घाटित ज्ञान महान, प्रभु गुण का मैं करूँ बखान।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 660॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. नख कान्ति दर्पण सम जान, प्रभु सम जग में कोई न आन।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 661॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. हंसा उड़ जाने के बाद, तन को पूछे मात न तात।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 662॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. तत्त्वों का प्रभु दर्श कराय, भविजन समकित ज्ञान लहाय।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 663॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. महाभाग गुण के भण्डार, प्रभु गुण का ना पारावार।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 664॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. हर्ष भाव से पूज रचाय, वह सातिशय पुण्य कमाय।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 665॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. सतां भव्यजन को सुखदाय, जब भावों से पूज रचाय।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 666॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ताम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. यथाजात जिनवर का रूप, वीतरागमय शान्त स्वरूप।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 667॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. दिवान्ध दिन में देख न पाय, मिथ्यात्वी निजदर्श न पाय।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 668॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. वामानन्दन करूँ प्रणाम, बुलवा लो मुझको शिवधाम।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 669॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. प्रतिदिन पूजन करने आय, समूल सारे पाप नशाय।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 670॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भाग्य विधाता तुम ही नाथ, भक्त नाम जपते दिन-रात।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 671॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. विभवः भव से रहित जिनेश, नन्त सुखी हैं दुःख ना लेश।
संकटहारक पार्श्व जिनेश, हृदय बसो मेरे पूर्णेश॥ 672॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

गुरुतर प्रभु को उर में धार, हो जाते भवि भवदधि पार।
अर्घ्य चढ़ाऊँ पार्श्व जिनेश, दूर करो मम सारे क्लेश॥12॥

ॐ ह्रीं श्रीं अतिशयगुरवे क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।